

## POEM-11 – आदमीनामा

**नज़ीर अकबराबादी**

- जन्म - आगरा शहर में सन 1735 में
- आगरा के अरबी-फ़ारसी के मशहूर अदीबों से तालीम हासिल की।
- नज़ीर दुनिया के रंग में रंगे हुए महाकवि थे।



(क) पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी के किन-किन रूपों का बखान करती है? क्रम से लिखिए।

**उत्तर**

(क) पहले छंद में कवि की दृष्टि आदमी में निम्नलिखित रूपों का बखान करती है-

1. आदमी का बादशाही रूप
2. आदमी का मालदारी रूप
3. आदमी का कमजोरी वाला रूप
4. आदमी का स्वादिष्ट भोजन करने वाला रूप
5. आदमी का सूखी रोटियाँ चबाने वाला रूप

(ख) चारों छंदों में कवि ने आदमी के सकारात्मक और नकारात्मक रूपों को परस्पर किन-किन रूपों में रखा है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर**

चारों छंदों में कवि ने आदमी के सकारात्मक और नकारात्मक रूपों का तुलनात्मक रूप प्रस्तुत किया है -

**सकारात्मक रूप**

1. एक आदमी शाही किस्म के ठाट-बाट भोगता है।

**नकारात्मक रूप**

1. दूसरे आदमी को गरीबी में दिन बिताने पड़ते हैं।

1. एक आदमी शाही किस्म के ठाट-बाट भोगता है।

2. एक आदमी मालामाल होता है

3. एक स्वादिष्ट भोजन खाता है।

4. एक धर्मस्थलों में धार्मिक पुस्तकें पढ़ता है

5. एक आदमी जानन्योछावर करता है

6. एक शरीफ सम्मानित है

1. दूसरे आदमी को गरीबी में दिन बिताने पड़ते हैं।

2. दूसरा आदमी कमज़ोर होता जाता है।

3. दूसरा सूखी रोटियाँ चबाता है।

4. दूसरा धर्मस्थलों पर जूतियाँ चुराता है।

5. दूसरा जान से मार डालता है।

6. दूसरा दुराचारी दुरव्यवहार करने वाला

(ग) 'आदमी नामा' शीर्षक कविता के इन अंशों को पढ़कर आपके मन में मनुष्य के प्रति क्या धारणा बनती है?

**उत्तर**

'आदमी नामा' शीर्षक कविता के अंशों को पढ़कर हमारे मन में यह धारणा बनती है कि

**उत्तर**

'आदमी नामा' शीर्षक कविता के अंशों को पढ़कर हमारे मन में यह धारणा बनती है कि मनुष्य की अनेक प्रवृत्तियां हैं। कोई व्यक्ति धनवान है तो किसी के पास खाने को कुछ नहीं है। कुछ लोग दूसरों की मदद करके खुश होते हैं तो कुछ दूसरों को अपमानित करके। कोई व्यक्ति शरीफ है तो कोई दुष्ट। अतः मनुष्य भाग्य और परिस्थितियों का दास होता है।

**(घ) इस कविता का कौन-सा भाग आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों?**

**उत्तर**

कविता का यह भाग बहुत अच्छा है - दुनिया में बादशाह है सो है वह भी आदमी और मुफ़लिस-ओ-गदा है सो है वो भी आदमी ज़रदार बेनवा है सो है वो भी आदमी निअमत जो खा रहा है वो भी आदमी टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी इस भाग में कवि ने मनुष्य के विभिन्न रूपों की व्याख्या की है। उन्होंने यह बतलाया है की धनवान और निर्धन दोनों आदमी ही हैं फिर भी उन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। इसी प्रकार पहलवान और कमजोर व्यक्ति भी आदमी ही हैं। सब आदमी होने के वाबजूद कोई रोज़ खाता है तो किसी को भूखा रहना पड़ता है।

निअमत जो खा रहा है वो भी आदमी टुकड़े चबा रहा है सो है वो भी आदमी इस भाग में कवि ने मनुष्य के विभिन्न रूपों की व्याख्या की है। उन्होंने यह बतलाया है की धनवान और निर्धन दोनों आदमी ही हैं फिर भी उन दोनों में बहुत बड़ा अंतर है। इसी प्रकार पहलवान और कमजोर व्यक्ति भी आदमी ही हैं। सब आदमी होने के वाबजूद कोई रोज़ खाता है तो किसी को भूखा रहना पड़ता है।

**(ङ) आदमी की प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए।**

**उत्तर**

'आदमी नामा' कविता के आधार पर आदमी की प्रवृत्तियाँ विभिन्न हैं। कुछ लोग बहुत अच्छे होते हैं कुछ लोग बहुत बुरे होते हैं। कुछ मस्जिद बनाते हैं, कुरान शरीफ़ का अर्थ बताते हैं तो कुछ वहीं जूतियाँ चुराते हैं। कुछ जान न्योछावर करते हैं, कुछ जान ले लेते हैं। कुछ दूसरों को सम्मान देकर खुश होते हैं तो कुछ अपमानित करके खुशी महसूस करते हैं।